## विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

# जलवायु परिवर्तन और जल संकट

गर्मी के साथ ही देश में पेयजल संकट गहराने लगा है। इस साल मार्च माह की शुरुआत से ही देश में गर्म हवाएं चलनी शुरू हो गई। समय से पहले गर्मी का तेजी से बढ़ना साफ तौर पर जलवायु परिवर्तन की ओर संकेत करता है। जलवायु परिवर्तन के कारण हमें कई चुनौतियों से जूझना होगा। इन चुनौतियों में एक बड़ा संकट पेय जल संकट है। जब किसी क्षेत्र में पानी की मांग बढ़ जाए और जल संसाधनों द्वारा उसकी आपूर्ति न हो पाये तो हम कहेंगे की वह क्षेत्र जल संकट से जूझ रहा है। देश में पानी की समस्या कोई नयी नहीं है।

शहरों के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के लिए हाहाकार मचा है। देश इस समय भीषण जल संकट से गुजर रहा है और इस आसन्न संकट पर जल्द काबू नहीं पाया गया तो हालत बदतर होने की सम्भावना है।

जल मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया वरदान है। जल है तो जीवन है। प्रकृति वर्षा द्वारा जल देती है। जल उपलब्धता को लेकर वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु समूचा विश्व चिन्तित है। जल ही जीवन है। जल के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव का अस्तित्व जल पर निर्भर करता है।

पृथ्वी पर कुल जल का अढाई प्रतिशत भाग ही पीने के योग्य है। इनमें से 89 प्रतिशत पानी कृषि कार्यों एवं 6 प्रतिशत पानी उद्योग कार्यों पर खर्च हो जाता है। शेष 5 प्रतिशत पानी ही पेयजल पर खर्च होता है। यही जल हमारी जिन्दगानी को संवारता है। भारत में पानी की उपलब्धता लगातार कम हो रही है। पानी की खपत की दृष्टि से विश्व में भारत का दूसरा स्थान है लेकिन दूसरी तरफ भूजल का दोहन भी उतनी तेजी से हो रहा है।

जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या विस्फोट और परंपरागत जल स्त्रोतों के अत्यधिक दोहन की वजह से भूजल का स्तर लगातार कम होता जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत विश्व के कुल भूजल का 24 फीसदी इस्तेमाल करता है। शहरों के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों में जिस तरह से जल स्तर कम हो रहा है उससे भविष्य में संकट और गहरा हो सकता है। धरती का करीब तीन चौथाई हिस्सा पानी पानी से भरा हुआ है, लेकिन इसमें से सिर्फ तीन फीसदी हिस्सा ही पीने योग्य है। भारत अपनी जल–जरूरतों की पूर्ति के लिए सबसे ज्यादा भू–जल पर ही निर्भर है। यह ग्रामीण एवं शहरी घरेलू जलापूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

**शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में जिस तरह से जल स्तर कम हो रहा है उससे भविष्य में संकट और गहरा हो सकता है। धरती का करीब तीन चौथाई हिस्सा पानी से भरा हुआ है, लेकिन इसमें से सिर्फ तीन फीसदी हिस्सा ही पीने योग्य है। भारत अपनी जल-जरूरतों की पूर्ति के लिए सबसे ज्यादा भू-जल पर ही निर्भर है।**

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 3 में से 1 व्यक्ति सुरक्षित पेयजल के बिना रहता है। दुनिया की आधी आबादी 2025 तक जल–तनावठास्त क्षेत्रों में रह रही होगी। दुनिया में लगभग 2.2 बिलियन लोग सुरक्षित पानी तक पहुंच के बिना रह रहे हैं। पृथ्वी का तीन चौथाई भाग पानी से ढका है मगर इस जल का 99 प्रतिशत पानी पिया नहीं जा सकता और पीने योग्य पानी पृथ्वी पर मात्र एक प्रतिशत ही है। पेयजल के महत्व को देखते हुए भूजल प्रबंधन महत्वपूर्ण हो जाता है। भूजल प्रबंधन के लिए पूरे विश्व को एक साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। भारत में विश्व की 17 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है किंतु जल उपलब्धता मात्र चार प्रतिशत है। देश के 267 जिलों में राष्ट्रीय औसत से अधिक भूजल का दोहन किया गया है।

देश इस समय भीषण जल संकट से गुजर रहा है और इस आसन्न संकट पर जल्द काबू नहीं पाया गया तो हालत बदतर होने की सम्भावना है। देश के करीब 60 करोड़ लोग पानी की कमी का सामना कर रहे हैं। करीब 75 प्रतिशत घरों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। साथ ही, देश में करीब 70 प्रतिशत पानी पीने लायक नहीं है। साफ और सुरक्षित पानी नहीं मिलने की वजह से हर साल करीब दो लाख लोगों की मौत होती है। पृथ्वी पर कुल जल का अढ़ाई प्रतिशत भाग ही पीने के योग्य है। इनमें से 89 प्रतिशत पानी कृषि कार्यों एवं 6 प्रतिशत पानी उद्योग कार्यों पर खर्च हो जाता है। शेष 5 प्रतिशत पानी ही पेयजल पर खर्च होता है। यही जल हमारी जिन्दगानी को संवारता है। देश और दुनियां में पर्यावरण की स्थिति लगातार असंतुलित होती जा रही है जिसके फलस्वरूप बहुत से क्षेत्र जल की कमी के कारण डार्क जोन में पहुंच चुके हैं।

अन्तराष्ट्रीय संस्था वर्ल्ड लाइफ फंड की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में 100 शहर ऐसे हैं जिन्हें वर्ष 2050 तक जल संकट के गंभीर खतरे का सामना करना पड़ेगा। इन 100 शहरों में 23 भारत के हैं। भारत के शहरों में पुणे, ठाणे, वडोदरा, राजकोट, कोटा, नासिक, जबलपुर, हुबली, धारवाड़, नागपुर, जालंधर, धनबाद, भोपाल, सूरत, दिल्ली, अलीगढ़, लखनऊ, कन्नूर, श्रीनगर, कोलकाता, मुंबई, कोझिकोड, विशाखापट्टनम चिन्हित किए गए हैं जो डार्क जोन में हैं। 2050 तक इन शहरों को कई खतरों का सामना करना पड़ेगा जिनमे जल की कमी,बाढ़ और प्रदूषण मुख्य हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन के अनुसार दुनियाभर में 86 फीसदी से अधिक बीमारियों का कारण असुरक्षित व दूषित पेयजल है। वर्तमान में 1600 जलीय प्रजातियां जल प्रदूषण के कारण लुप्त होने के कगार पर हैं। विश्व में 1.10 अरब लोग दूषित पेयजल पीने को मजबूर हैं और साफ पानी के बगैर अपना गुजारा कर रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों में सिंचाई एवं अन्य कार्यों के लिए भूमिगत जल के अत्यधिक प्रयोग के कारण भूमिगत जल के स्तर में गिरावट आई है। सभी स्त्रोतों से प्राप्त जल मनुष्य के लिए उपयोगी नहीं होता। औद्योगीकरण के कारण नदियों का जल प्रदूषित होता जा रहा है, इन्हीं कारणों से मानव जगत् में पेयजल की समस्या उत्पन्न हो गई है। सरकार को जनता में जागरूकता लाने के लिए विशेष प्रबन्ध और उपाय करने होंगे। आवश्यकता इस बात की है कि हम जल के महत्व को समझे और एक–एक बूंद पानी का संरक्षण करें तभी लोगों की प्यास बुझाई जा सकेगी।

**–अतिथि संपादक**
**बाल मुकुन्द ओझा**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

## राशिफल शनिवार 16 अप्रेल, 2022

पंडित अनिल शर्मा

श्री चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, शनिवार, विक्रम संवत 2079, हस्त नक्षत्र प्रातः 8:40 तक, हर्षण योग रात्रि 2:44 तक, विष्टि करण दिन 1:25 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:01 पर तुला राशि में प्रवेश करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य–मेष, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–कुम्भ, बुध–मेष, गुरू–मीन, शुक्र–कुम्भ, शनि–मकर, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

रवियोग प्रातः 8:40 तक बना रहेगा। भद्रा दिन 1:25 तक रहेगी। आज चैत्री पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत, मन्वादि, श्री हनुमान जन्मोत्सव, सर्व देव दमनोत्सव, इस्टर सेटर डे है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** शुभ 7:41 से 9:16 तक, चर 12:27 से 2:02 तक, लाभ–अमृत 2:02 से 5:12 तक।

**राहूकाल:** 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:06, सूर्यास्त 6:47

**मेष**
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अटके हुए कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

**सिंह**
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

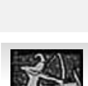

**धनु**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**वृष**
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

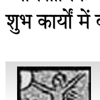

**कन्या**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**मकर**
धार्मिक–मांगलिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

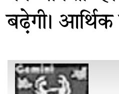

**मिथुन**
परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

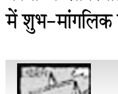

**तुला**
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

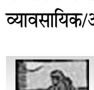

**कुंभ**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

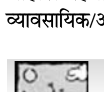

**कर्क**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

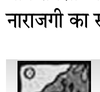

**वृश्चिक**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

**मीन**
परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

# एक राष्ट्र : एक चुनाव

देश में 1952, 1957, 1962 एवं 1967 में लोकसभा एवं सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ सम्पन्न हुए थे

एक देश एक चुनाव का अर्थ भारत की लोकसभा एवं समस्त विधानसभाओं का चुनाव प्रत्येक पांच वर्ष में एक साथ कराने की व्यवस्था से है, जिसमें नगरपालिका एवं पंचायत चुनाव सम्मिलित नहीं हैं।

देश में 1952, 1957, 1962 एवं 1967 में लोकसभा एवं सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ सम्पन्न हुए थे। 1968 व 1969 में कुछ विधान–सभाएं राजनैतिक कारणों से समय से पूर्व भंग की गयी, जिससे एक राष्ट्र, एक चुनाव की व्यवस्था बाधित होना प्रारम्भ हो गयी। न केवल विधानसभाएं अपितु लोकसभा भी समय से पूर्व भंग होने लगी। फिर तो यह क्रम चल पड़ा। पिछले कुछ समय से तो भारत चुनावों के चक्रव्यूह में फंसा हुआ देश बन कर रह गया है। परिणाम स्वरूप प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री से लेकर सांसद, विधायक, सरपंच आदि सभी राजनीतिज्ञों एवं सरकारी मशीनरी का समय देश के विकास में लगने के बजाय चुनावों में लग रहा है। बार–बार चुनाव होने से सरकारी धन अनुत्पादक कार्यों में लग रहा है। हॉस्पिटल, स्कूल व सड़कों के लिए खर्च होने वाला धन चुनावी व्यवस्था में लग रहा है। यही स्थिति राजनैतिक दलों की भी हो रही है, लोकसभा और विधानसभा के चुनाव अलग–अलग होने से उनके खर्च भी दुगुने हो गये हैं। स्वाभाविक रूप से प्रत्याशियों के खर्च भी इसी ढंग से बढ़ गये हैं।

निःसंदेह बार–बार चुनाव से समय एवं धन की बर्बादी तो तय है, साथ ही चुनावों के कारण हर बार लगने वाली आचार–संहिता भी विकास एवं जनहित के कार्यों के लिए रुकावट बनती है। चुनावी आचार संहिता के कारण राजनीतिज्ञ पर्दे के पीछे चला जाता है। प्रजातंत्र की ड्राइविंग सीट पर सरकारी सामंत बैठ जाते हैं। कार्यपालिका अपनी मनमर्जी से राज करने लगती है, उन पर नियंत्रण समाप्त हो जाता है। लालफीताशाही और भ्रष्टाचार बढ़ जाता है।

पांच वर्ष की अवधि में तीन–चार बार के चुनावों के कारण बार–बार लगने वाली आचार संहिता की वजह से विधायिका द्वारा शासन करने का कालखण्ड भी बेवजह लगभग एक वर्ष कम हो रहा है। यह स्थिति किसी भी देश के प्रजातंत्र के लिए ठीक नहीं है। बार–बार चुनाव होते रहने की स्थिति में राजनीतिज्ञों एवं राजनैतिक दलों को समाज की समरसता को भंग करने का बार–बार अवसर मिलेगा। एक साथ चुनाव होने की स्थिति में इस प्रकार की समस्याओं से कुछ राहत मिलेगी।

डॉ. कैलाश सोडाणी

एक राष्ट्र एक चुनाव से असहमति वाले विद्वानों का यह मानना है कि इतनी बड़ी आबादी वाले देश में लोकसभा एवं सभी विधानसभाओं के एक साथ चुनाव सम्भव नहीं है। हमारे देश के मजबूत एवं गौरवशाली इतिहास के धनी चुनाव आयोग एवं डिजिटल वर्ल्ड में यह तर्क बहुत कमजोर है। भारत की 75 वर्ष की शानदार और अभूतपूर्व प्रजातांत्रिक यात्रा के लिए चुनाव आयोग की निष्पक्ष एवं निर्विवादित भूमिका को सहर्ष स्वीकार करना चाहिये।

कुछ बुद्धिजीवियों का यह मानना है कि संविधान ने हमें जो संसदीय मॉडल प्रदान किया है, जिसके तहत लोकसभा एवं विधानसभाएं पांच वर्ष के लिए चुनी जाती हैं। लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ करवाने पर कुछ विधानसभाओं का कार्यकाल घटाया जायेगा और कुछ का बढ़ाया जायेगा। जो न्यायसंगत नहीं है परन्तु यह स्थिति तो केवल एक बार आयेगी। बहुत कुछ पाने के लिए थोड़ा सा त्याग तो बनता भी है।

एक चुनाव की अवधारणा की क्रियान्विति के लिए संविधान एवं अन्य कानूनों में संशोधन की आवश्यकता रहेगी, जो देश के वर्तमान राजनैतिक माहौल में कठिन लगता है। वैसे नुकसान किसी भी राजनैतिक दल को नहीं है, फिर भी केवल विरोध के लिए विरोध किया जा रहा है। जिसे आपसी विचार विमर्श एवं सहमति से ठीक किया जा सकता है। भारत में इसी प्रकार की नई मुहिम के अन्तर्गत 'एक देश–एक कर' की व्यवस्था को जी.एस.टी. के द्वारा सफलतापूर्वक लागू किया गया है। देश का नीति आयोग, चुनाव आयोग, संविधान समीक्षा आयोग और विधि आयोग लम्बे एवं सार्थक विचार–विमर्श के बाद यह स्वीकार कर चुके हैं कि एक राष्ट्र एक चुनाव की व्यवस्था को देश हित में यथाशीघ्र प्रारम्भ किया जाना चाहिये।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहुत ही दृढ़ता के साथ देशवासियों को एक चुनाव के लिए आव्हान किया। सभी राजनैतिक दलों को राष्ट्रहित में एक राष्ट्र एक चुनाव के निर्णय में भागीदार बनना चाहिये।

**–डॉ. कैलाश सोडाणी**
**पूर्व कुलपति**
**महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर**
**गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा**

## पीपा जयंती पर विशेष

# आज भी प्रासंगिक है संत पीपा जी का भक्ति साहित्य

भारतवर्ष में ऐसे अनेकों संत–महात्माओं का उदय हुआ, जिन्होंने राजपाट का त्याग कर संन्यासी जीवन को अंगीकार किया। मानवता की सेवा की तथा अज्ञानियों को धर्म की राह बताई। ऐसे ही महापुरुषों में संत पीपा जी महाराज का नाम अग्रणीय है।

संत शिरोमणि पीपा जी का जन्म विक्रम संवत 1380 में राजस्थान में झालावाड़ के पास स्थित गागरोन में हुआ था। वे खींची वंश के प्रतापी राजा थे। पीपाजी का जन्म चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, बुधवार विक्रम संवत 1380 को हुआ था। इनका बचपन का नाम प्रताप सिंह था। उच्च राजसी शिक्षा–दीक्षा के साथ ये युद्ध कौशल में निपूर्ण थे। पिता कड़वा राव के देहांत के बाद केवल बीस वर्ष की आयु में आपका गागरोन के राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। अपने अल्प राज्यकाल में पीपाजी ने फिरोजशाह तुगलक, मलिक जर्दफिरोज व लल्लन पठान जैसे योद्धाओं को पराजित कर अपनी वीरता का लोहा मनवाया।

अच्छे–अच्छे योद्धाओं को धूल चटाने वाले बारह रानियों के स्वामी गढ़ गागरोन के महाराज प्रताप सिंह के मन में ना जाने कैसे अध्यात्म की ज्योत प्रज्वलित हो उठी। वे संसारिक भोग विलासिता से दूर होते गए। उनका मन अब राजपाट में कम ही लगता था। उस समय तक उनके जीवन में गुरु का आगमन नहीं हुआ था। उन्होंने सोचा के उन्हें किसी न किसी को गुरु बना ही लेना चाहिए। उन्हीं दिनों काशी के संत जगत गुरु रामानंदचार्य जी महाराज की चर्चा पूरे देश में फैली हुई थी। उन्होंने मन ही मन गुरु रामानंदचार्य जी महाराज को अपना गुरु मान लिया। एक दिन वे गागरोन से प्रस्थान कर काशी जा पहुंचे। काशी में रामानंदाचार्य जी के आश्रम जा पहुंचे तथा शिष्य बनाने की इच्छा जताई। वहां मौजूद लोगों ने रामानन्दाचार्य जी को बताया कि गढ़ गागरोन का राजा आया है। कहता है कि आपसे दीक्षा लेनी है। गुरु रामानंदचार्य जी महाराज ने सोचा की एक राजा दीक्षा लेकर क्या करेगा? लगता है किसी पारिवारिक परेशानी से होकर क्षणिक दुखी हो गया है, इसलिए दीक्षा लेने मेरे पास चला आया है। उन्होंने कुछ सोच कर वहां मौजूद शिष्यों से कहा कि राजा से कहो कि सामने जो कुआं है, उसमें जाकर कूद जाए। गुरु आज्ञा पाकर कुछ शिष्य राजा प्रतापसिंह के पास पहुंचे तथा कहा कि गुरु जी कहते हैं कि कुएं में कूद जाओ। इतना सुनते ही राजा प्रतापसिंह पास ही स्थित कुएं की तरफ दौड़ पड़े। वे कुएं के भीतर कूदने ही वाले थे कि लोगों ने उन्हें पकड़ लिया।

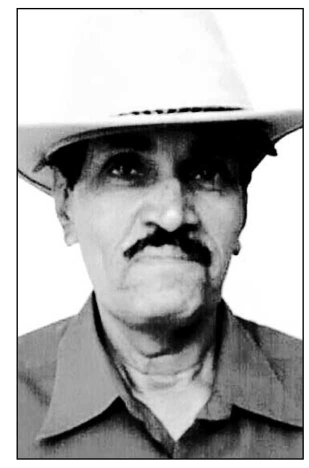

मिश्रीलाल पंवार

यह बात गुरु जी के कानों तक पहुंची तो वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने राजा प्रतापसिंह को अपने पास बुलाया तथा गागरोन जाकर प्रजा सेवा करते हुए भक्ति करने व संत जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया। गुरु आज्ञा पाकर राजा प्रतापसिंह पुनः अपने राज्य गागरोन आ पहुंचे। उन्होंने भक्ति करने के साथ साथ साधु–संतों की सेवा भी आरम्भ कर दी। गरीबों के लिए लंगर लगवा दिए तथा कीर्तन मण्डलियां कायम कर दीं। राजपाट का कार्य मंत्रियों पर छोड़ दिया। सीता जी के अलावा बाकी रानियों को राजमहल में खर्च देकर भक्ति करने के लिए कह दिया।

एक वर्ष पश्चात संत रामानन्दाचार्य जी अपनी शिष्य मंडली के साथ गागरोन आए व पीपाजी को दीक्षा देकर वैष्णव धर्म के प्रचार का आदेश दिया। इसके साथ ही राजा प्रतापसिंह संत पीपा जी बन गए। इसके बाद पीपाजी ने अपना सारा राजपाट अपने भतीजे कल्याणराव को सौंप कर गुरु आज्ञा से अपनी सबसे छोटी रानी सीताजी के साथ वैष्णव–धर्म प्रचार–यात्रा पर निकल पड़े। पीपाजी सन्त कवि थे। उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं। वे भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक थे। गुरु ग्रंथ साहिब के अलावा 27 पद, 154 साखियां, चितावणि व ककहारा जोग ग्रंथ इनके द्वारा रचित संत साहित्य की अमूल्य निधियां हैं।

पीपाजी महाराज का संपूर्ण जीवन चमत्कारों से भरा हुआ रहा। राजकाल में देवीय साक्षात्कार करने का चमत्कार प्रमुख है। उसके बाद संन्यास काल में स्वर्ण द्वारिका में सात दिनों का प्रवास, पीपावाव में रणछोडराय जी की प्रतिमाओं को निकालना व अकालग्रस्त इस में अन्न क्षेत्र चलाना, सिंह को अहिंसा का उपदेश देना, लाठियों को हरे बांस में बदलना, एक ही समय में पांच विभिन्न स्थानों पर उपस्थित होना, मृत तेली को जीवनदान देना, सीता जी का सिंहनी के रूप में आना आदि कई चमत्कार जनश्रुतियों में प्रचलित हैं।

संत पीपा जी

इनके द्वारा सृजित यह नवीन वर्ग ऐसा था जो हाथों से परिश्रम करता और मुख से ब्रह्म का उच्चारण करता था। समाज सुधार की दृष्टि से संत पीपाजी ने बाहरी आडम्बरों, कर्मकांडों एवं रूढ़ियों की कड़ी आलोचना की तथा बताया कि ईश्वर निर्गुण व निराकार है वह सर्वत्र व्याप्त है। मानव मन में ही सारी सिद्धिया व वस्तुएं व्याप्त हैं। ईश्वर या परम ब्रह्म की पहचान मन की अनुभूति से है।

संत पीपा जी के अहिंसा के उपदेशों से प्रभावित होकर उस समय हजारों की संख्या में क्षत्रियों ने हिंसा का मार्ग त्याग कर सीवन कला को अंगीकार कर लिया। उनका सर्वाधिक प्रभाव मारवाड़ पर पड़ा। इनके अनुयायी पीपा क्षत्रीय दर्जी समाज के नाम से पहचाने जाते हैं। संत पीपा जी महाराज मारवाड़ की धरा पर कब पधारे, इसका इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है मगर उनके अनुयायियों का यहां बड़ी संख्या में होना प्रमाणित करता है कि वे मारवाड़ में आए थे तथा इस दौरान क्षत्रियों पर गहरा प्रभाव छोड़ा था।

कहते हैं कि पीपा जी के बताए अनुसार बड़ी संख्या में क्षत्रियों ने तलवार का त्याग कर सुई धागे से जीवन यापन करने की राह चुनी थी। हर वर्ष चैत्रिक पूर्णिमा को अपने आराध्य देव का जन्मोत्सव भक्ति भाव से मना कर श्रद्धा में शीश नवाते हैं। इस वर्ष 16 अप्रेल को संत पीपा जी का 699 वां जन्मोत्सव भारत भर में मनाया जाएगा।

**मिश्रीलाल पंवार**

# ख्याली गांव में पन्द्रह दिनों से नहीं पहुंचा आपणी योजना का पानी

**■ गांव ख्याली के निवासियों के लिए झुंझुनूं जिले में होना बना जी का जंजाल**

**चूरू, (कासं)।** निकटवर्ती गांव ख्याली के निवासियों के लिए झुंझुनूं जिले में होना जी का जंजाल बना हुआ है। ख्याली में पन्द्रह दिनों से आपणी योजना चूरू का पानी नहीं पहुंच रहा है। झुंझुनूं जिले में होने के कारण आपणी योजना चूरू के अधिकारी ग्रामीणों की कोई सुनवाई नहीं कर रहे हैं। ख्याली निवासी राजेन्द्रसिंह ने बताया कि गांव में पिछले 15 दिन से भी अधिक समय से पेयजल की भंयकर समस्या बनी हुई है।

गांव ख्याली में चूरू जिले के सिरसला गांव में बनी आपणी योजना चूरू की टंकी से पेयजल सप्लाई होता है। पहले यहां 2 दिन पानी आता था। गर्मी का मौसम शुरू होने के बाद यहां आपणी योजना चूरू के अधिकारियों व कर्मचारियों ने पेयजल सप्लाई करने में लापरवाही बरतनी शुरू कर दी। अब गांव ख्याली के अगुणा पाना में पेयजल की सप्लाई पूरी से बंद कर दी गई है। यहां आपणी योजना चूरू को अवगत करवा देने के बाद भी अधिकारीगण कोई समाधान नहीं कर रहे हैं। उधर झुंझुनूं जिले के उच्च अधिकारी ख्याली गांव में जाने को ही काले पानी की सजा मानते हैं। यही कारण है कि गांव ख्याली में आज तक कोई भी कलैक्टर, एडीएम, एसडीएम या अन्य किसी विभाग का उच्च अधिकारी नहीं आया है। इसी कारण गांव ख्याली के लोग पेयजल और चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। जनप्रतिनिधि सिर्फ अपने वोटों से मतलब रखते हैं, ग्रामीणों की समस्याओं से उन्हें कोई लेना–देना नहीं है। जनप्रतिनिधि ही अगर ख्याली की ओर ध्यान देते तो आज लोगों को पेयजल व चिकित्सा के लिए भटकना नहीं पड़ता।

यहां चन्द्र कंवर ने कहा कि गांव ख्याली में मलसीसर से पेयजल सप्लाई शुरू की जावे, तभी यहां पेयजल की समस्या का समाधान हो सकेगा। उन्होंने बताया कि घरों में बारिश का पानी एकत्रित करने के लिए बने कुण्ड खाली हो गए हैं। गांव के कुवों का पानी एकदम खारा है। ऐसे में पेयजल की बड़ी भारी समस्या उत्पन्न हो गई है।

अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों को पेयजल समस्या का समाधान करवाना चाहिए। गौरतलब है कि मूलभूत सुविधाओं से वंचित एवं परेशान ख्याली के ग्रामीण गांव को चूरू जिले में शामिल करने की मांग भी कई बार कर चुके हैं।

# देर रात तक जमी रूण्डेडा की प्रसिद्ध गैर

**नगर के जोशिला हनुमान मंदिर प्रांगण में हनुमान जन्मोत्सव को लेकर आयोजित मेला व अन्य कार्यक्रम के तहत आयोजित गैर नृत्य देर रात तक जमा रहा।**

**■ मेले का आज यज्ञ हवन के साथ होगा समापन**

**कानोड़, (निसं)।** नगर के जोशिला हनुमान मंदिर प्रांगण में हनुमान जन्मोत्सव को लेकर आयोजित मेला व अन्य कार्यक्रम के तहत गुरूवार रात को मंदिर परिसर में आयोजित गैर नृत्य देर रात तक जमा। रूण्डेडा गांव के मेनारिया समाज के लोग मेवाड की पंरपरा व सस्कृति को जीवंत रूप देते हुए पारंपरिक मेवाडी पगडी सहित परिधानों में पहुंचे। यहां मंदिर मण्डल के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत सम्मान किया। इसके बाद ढोल की थाप पर गैर नृत्य शुरू हुआ जो रात करीब 12 बजे तक चला।

बुजुर्गो ने एक हाथ में तलवार तो दूसरे हाथ में लाठी लेकर मनमोहन गैर नृत्य किया वहीं गैर नृत्य के दौरान एक नन्हा बालक भी आकर्षण का केन्द्र रहा जिसने बड़े बुजुर्गों के साथ कदमताल करते हुए नृत्य किया। आयोजन को लेकर मेले में बालाजी सहित वानर सेना की आकर्षक झाकियों का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में एक लाख रूपये का सहयोग देने वाले भामाशाह व भाजपा वल्लभनगर प्रभारी हिम्मत सिंह झाला का मंदिर मण्डल पदाधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधान मोहन लाल मेनारिया, कानोड़ भाजपा मण्डल अध्यक्ष भगवतीलाल शर्मा , पूर्व पालिकाध्यक्ष अनिल शर्मा सहित अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक चन्द्रप्रकाश सुथार द्वारा किया वहीं आभार मंदिर मण्डल के भूपेन्द्र जोशी द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम के तहत आयोजित मेले में मेलार्थियों ने चकरी डोलर, गोल गप्पे सहित के आनंद के साथ खरीददारी की। आयोजक भूपेन्द्र जोशी ने बताया कि कार्यक्रम का समापन 16 अप्रेल को यज्ञ हवन की पुर्णाहूति के साथ होगा।